



Boy

03 Apr 2026

12:36 AM

Jodhpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121797301

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 2-03/04/2026  
दिन \_\_\_\_\_: गुरु-शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 00:36:24 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 45:21:04 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Jodhpur  
राज्य \_\_\_\_\_: Rajasthan  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 26:18:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 73:08:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:37:28 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 23:58:56 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:03:36 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 12:43:29 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:27:58 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:54:38 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:26:40 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 18:49:20 मीन  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 04:24:14 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कन्या - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: चित्रा - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: मंगल  
योग \_\_\_\_\_: व्याघात  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: व्याघ्र  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मूषक  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: पो-पौरुष  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मेष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1948	चैत्र	13
पंजाबी	संवत : 2082	चैत्र	21
बंगाली	सन् : 1432	चैत्र	19
तमिल	संवत : 2082	पंगुनी	20
केरल	कोल्लम : 1201	मीनम	20
नेपाली	संवत : 2082	चैत्र	20
चैत्रादि	संवत : 2083	वैशाख	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2083	चैत्र	शुक्ल 1

### पंचांग

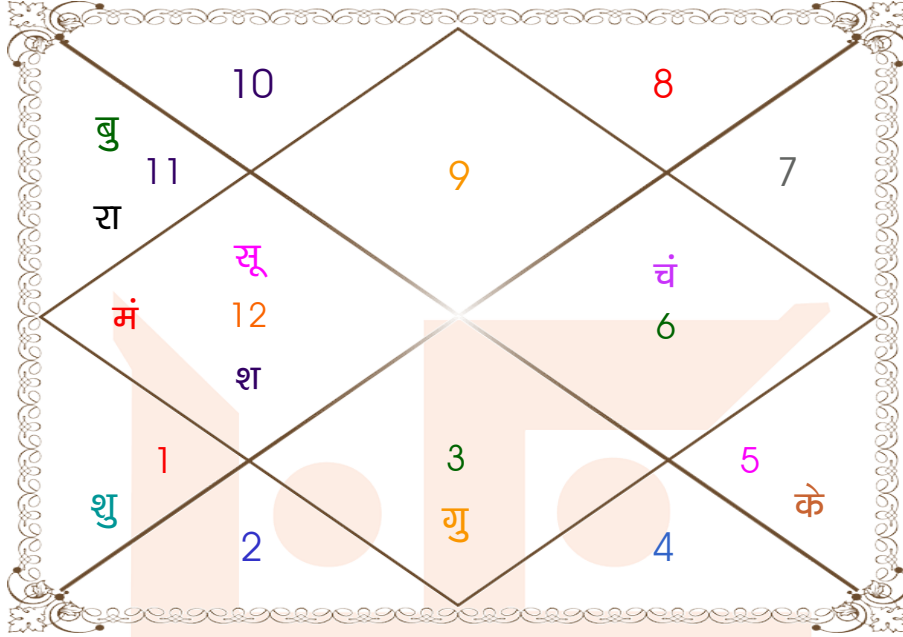
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:41:42  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:38:37 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : चित्रा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : ध्रुव  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:19:28 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : व्याघात  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:41:42 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 17:24:29  
भभोग \_\_\_\_\_ : 64:25:33  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : मंगल 5 वर्ष 1 मा 5 दि

### घात चक्र

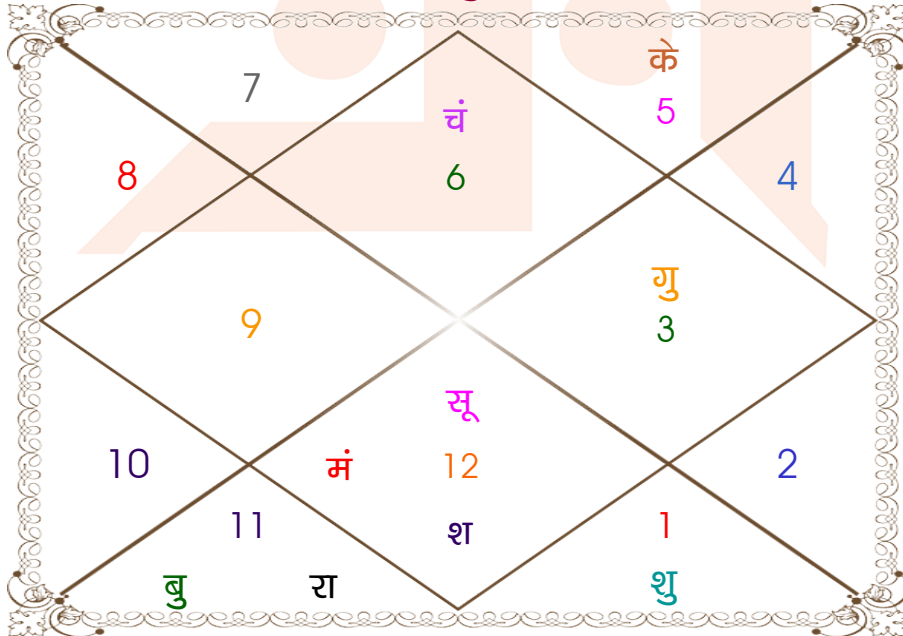
मास \_\_\_\_\_ : भाद्रपद  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : श्रवण  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मार्जार  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मेष  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृष  
बुध \_\_\_\_\_ : मीन  
गुरु \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कर्क  
शनि \_\_\_\_\_ : मीन  
राहु \_\_\_\_\_ : सिंह

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

श सू मं	शु		गु
रा बु			
			के
ल			चं

### लग्न कुण्डली

		मं	श
गु	शु	सू	रा बु
के			ल
	चं		

विंशोत्तरी  
मंगल 5वर्ष 1मा 5दि  
मंगल

03/04/2026

09/05/2144

मंगल	08/05/2031
राहु	08/05/2049
गुरु	08/05/2065
शनि	08/05/2084
बुध	09/05/2101
केतु	09/05/2108
शुक्र	09/05/2128
सूर्य	09/05/2134
चन्द्र	09/05/2144

योगिनी

मंगला 0वर्ष 8मा 22दि  
मंगला

03/04/2026

25/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	03/04/2026
भ्रामरी	05/04/2026
भद्रिका	25/05/2026
उल्का	25/07/2026
सिद्धा	04/10/2026
संकटा	25/12/2026

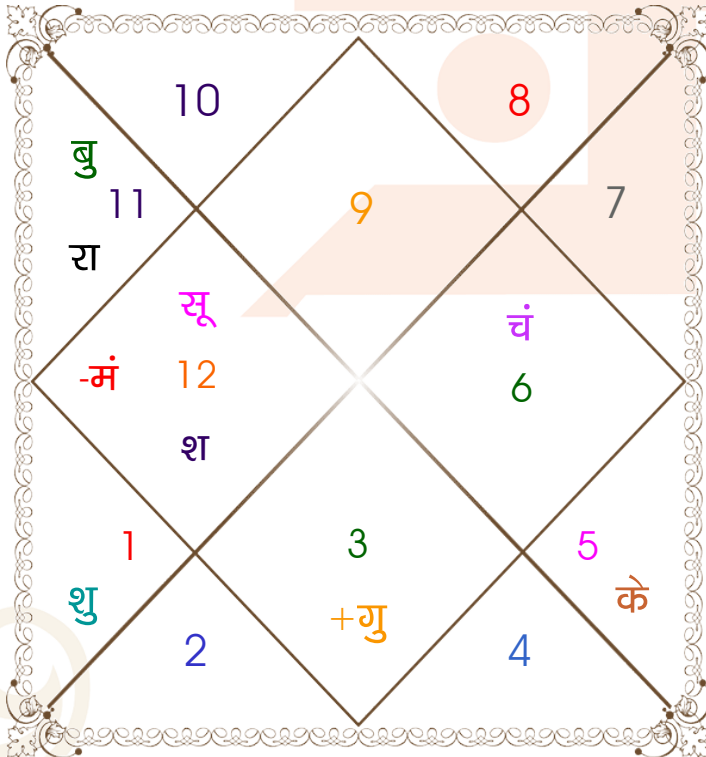
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	04:24:14	329:34:11	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
सूर्य			मीन	18:49:20	00:59:09	रेवती	1	27	गुरु	बुध	केतु	मित्र राशि
चंद्र			कन्या	26:57:26	12:27:48	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	मित्र राशि
मंगल		अ	मीन	00:17:49	00:46:54	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
बुध			कुंभ	21:04:29	00:56:17	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	सम राशि
गुरु			मिथु	21:40:37	00:04:13	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	09:37:35	01:13:48	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	शनि	सम राशि
शनि		अ	मीन	11:32:44	00:07:27	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	सम राशि
राहु		व	कुंभ	14:25:10	00:05:24	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	मित्र राशि
केतु		व	सिंह	14:25:10	00:05:24	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	04:36:51	00:02:40	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	08:02:45	00:02:15	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
प्लूटो			मक	11:01:09	00:00:56	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	---
दशम भाव			कन्या	17:36:02	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	शनि	--

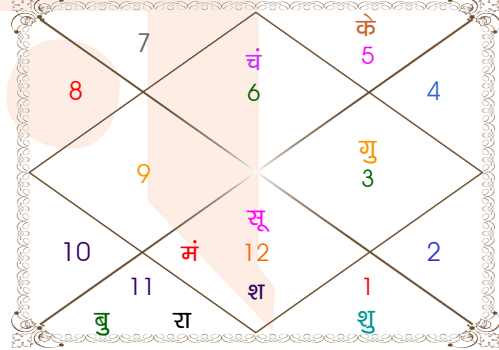
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:32

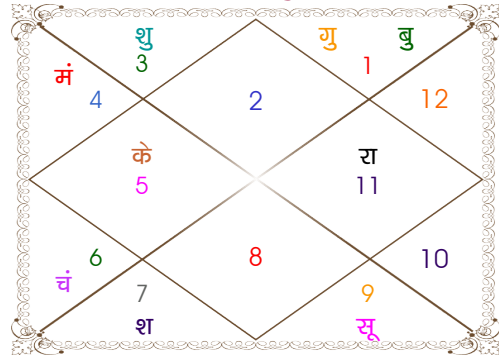
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 21:36:12	धनु 04:24:14
2	धनु 21:36:12	मकर 08:48:10
3	मकर 26:00:08	कुम्भ 13:12:06
4	मीन 00:24:04	मीन 17:36:02
5	मेष 00:24:04	मेष 13:12:06
6	मेष 26:00:08	वृष 08:48:10
7	वृष 21:36:12	मिथुन 04:24:14
8	मिथुन 21:36:12	कर्क 08:48:10
9	कर्क 26:00:08	सिंह 13:12:06
10	कन्या 00:24:04	कन्या 17:36:02
11	तुला 00:24:04	तुला 13:12:06
12	तुला 26:00:08	वृश्चिक 08:48:10

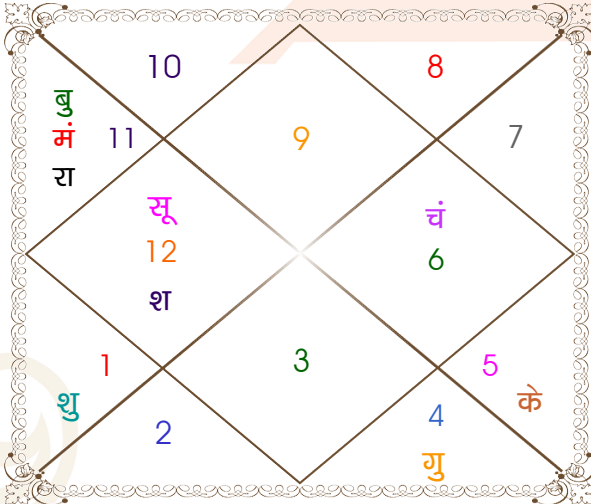
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	04:24:14
2	मकर	07:34:50
3	कुम्भ	13:32:02
4	मीन	17:36:02
5	मेष	16:31:30
6	वृष	11:11:49
7	मिथुन	04:24:14
8	कर्क	07:34:50
9	सिंह	13:32:02
10	कन्या	17:36:02
11	तुला	16:31:30
12	वृश्चिक	11:11:49

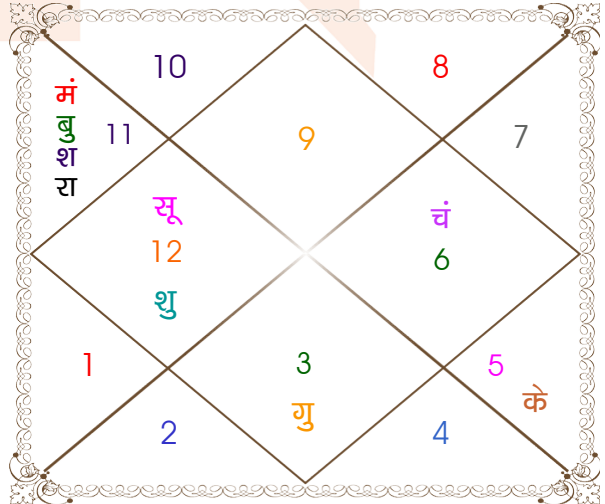
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 1 मास 5 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
03/04/2026	08/05/2031	08/05/2049	08/05/2065	08/05/2084
08/05/2031	08/05/2049	08/05/2065	08/05/2084	09/05/2101
00/00/0000	राहु 19/01/2034	गुरु 26/06/2051	शनि 11/05/2068	बुध 04/10/2086
03/04/2026	गुरु 13/06/2036	शनि 06/01/2054	बुध 19/01/2071	केतु 01/10/2087
गुरु 28/09/2026	शनि 20/04/2039	बुध 13/04/2056	केतु 28/02/2072	शुक्र 01/08/2090
शनि 07/11/2027	बुध 06/11/2041	केतु 20/03/2057	शुक्र 29/04/2075	सूर्य 08/06/2091
बुध 03/11/2028	केतु 25/11/2042	शुक्र 19/11/2059	सूर्य 10/04/2076	चंद्र 06/11/2092
केतु 01/04/2029	शुक्र 25/11/2045	सूर्य 06/09/2060	चंद्र 10/11/2077	मंगल 03/11/2093
शुक्र 01/06/2030	सूर्य 19/10/2046	चंद्र 06/01/2062	मंगल 19/12/2078	राहु 23/05/2096
सूर्य 07/10/2030	चंद्र 19/04/2048	मंगल 13/12/2062	राहु 25/10/2081	गुरु 29/08/2098
चंद्र 08/05/2031	मंगल 08/05/2049	राहु 08/05/2065	गुरु 08/05/2084	शनि 09/05/2101

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
09/05/2101	09/05/2108	09/05/2128	09/05/2134	09/05/2144
09/05/2108	09/05/2128	09/05/2134	09/05/2144	00/00/0000
केतु 05/10/2101	शुक्र 08/09/2111	सूर्य 26/08/2128	चंद्र 09/03/2135	मंगल 05/10/2144
शुक्र 05/12/2102	सूर्य 07/09/2112	चंद्र 25/02/2129	मंगल 09/10/2135	राहु 23/10/2145
सूर्य 12/04/2103	चंद्र 09/05/2114	मंगल 03/07/2129	राहु 08/04/2137	गुरु 04/04/2146
चंद्र 11/11/2103	मंगल 09/07/2115	राहु 27/05/2130	गुरु 08/08/2138	00/00/0000
मंगल 08/04/2104	राहु 09/07/2118	गुरु 16/03/2131	शनि 09/03/2140	00/00/0000
राहु 27/04/2105	गुरु 09/03/2121	शनि 26/02/2132	बुध 08/08/2141	00/00/0000
गुरु 03/04/2106	शनि 09/05/2124	बुध 01/01/2133	केतु 09/03/2142	00/00/0000
शनि 12/05/2107	बुध 09/03/2127	केतु 09/05/2133	शुक्र 08/11/2143	00/00/0000
बुध 09/05/2108	केतु 09/05/2128	शुक्र 09/05/2134	सूर्य 09/05/2144	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 5 वर्ष 1 मा 9 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र
03/04/2026	28/09/2026	07/11/2027	03/11/2028	01/04/2029
28/09/2026	07/11/2027	03/11/2028	01/04/2029	01/06/2030
00/00/0000	शनि 01/12/2026	बुध 28/12/2027	केतु 12/11/2028	शुक्र 11/06/2029
00/00/0000	बुध 28/01/2027	केतु 18/01/2028	शुक्र 07/12/2028	सूर्य 03/07/2029
03/04/2026	केतु 20/02/2027	शुक्र 19/03/2028	सूर्य 14/12/2028	चंद्र 07/08/2029
केतु 08/04/2026	शुक्र 29/04/2027	सूर्य 06/04/2028	चंद्र 27/12/2028	मंगल 01/09/2029
शुक्र 04/06/2026	सूर्य 19/05/2027	चंद्र 06/05/2028	मंगल 04/01/2029	राहु 04/11/2029
सूर्य 21/06/2026	चंद्र 22/06/2027	मंगल 27/05/2028	राहु 27/01/2029	गुरु 31/12/2029
चंद्र 19/07/2026	मंगल 15/07/2027	राहु 21/07/2028	गुरु 16/02/2029	शनि 08/03/2030
मंगल 08/08/2026	राहु 14/09/2027	गुरु 07/09/2028	शनि 11/03/2029	बुध 08/05/2030
राहु 28/09/2026	गुरु 07/11/2027	शनि 03/11/2028	बुध 01/04/2029	केतु 01/06/2030
मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि
01/06/2030	07/10/2030	08/05/2031	19/01/2034	13/06/2036
07/10/2030	08/05/2031	19/01/2034	13/06/2036	20/04/2039
सूर्य 08/06/2030	चंद्र 25/10/2030	राहु 03/10/2031	गुरु 15/05/2034	शनि 25/11/2036
चंद्र 19/06/2030	मंगल 06/11/2030	गुरु 12/02/2032	शनि 01/10/2034	बुध 21/04/2037
मंगल 26/06/2030	राहु 08/12/2030	शनि 17/07/2032	बुध 02/02/2035	केतु 21/06/2037
राहु 15/07/2030	गुरु 06/01/2031	बुध 04/12/2032	केतु 26/03/2035	शुक्र 12/12/2037
गुरु 01/08/2030	शनि 09/02/2031	केतु 30/01/2033	शुक्र 19/08/2035	सूर्य 02/02/2038
शनि 21/08/2030	बुध 11/03/2031	शुक्र 14/07/2033	सूर्य 01/10/2035	चंद्र 29/04/2038
बुध 09/09/2030	केतु 23/03/2031	सूर्य 01/09/2033	चंद्र 14/12/2035	मंगल 29/06/2038
केतु 16/09/2030	शुक्र 28/04/2031	चंद्र 22/11/2033	मंगल 03/02/2036	राहु 02/12/2038
शुक्र 07/10/2030	सूर्य 08/05/2031	मंगल 19/01/2034	राहु 13/06/2036	गुरु 20/04/2039
राहु - बुध	राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र
20/04/2039	06/11/2041	25/11/2042	25/11/2045	19/10/2046
06/11/2041	25/11/2042	25/11/2045	19/10/2046	19/04/2048
बुध 30/08/2039	केतु 29/11/2041	शुक्र 27/05/2043	सूर्य 11/12/2045	चंद्र 04/12/2046
केतु 23/10/2039	शुक्र 01/02/2042	सूर्य 20/07/2043	चंद्र 08/01/2046	मंगल 05/01/2047
शुक्र 27/03/2040	सूर्य 20/02/2042	चंद्र 20/10/2043	मंगल 27/01/2046	राहु 28/03/2047
सूर्य 12/05/2040	चंद्र 24/03/2042	मंगल 23/12/2043	राहु 17/03/2046	गुरु 09/06/2047
चंद्र 29/07/2040	मंगल 15/04/2042	राहु 04/06/2044	गुरु 30/04/2046	शनि 04/09/2047
मंगल 21/09/2040	राहु 12/06/2042	गुरु 28/10/2044	शनि 21/06/2046	बुध 21/11/2047
राहु 08/02/2041	गुरु 02/08/2042	शनि 20/04/2045	बुध 07/08/2046	केतु 23/12/2047
गुरु 12/06/2041	शनि 02/10/2042	बुध 22/09/2045	केतु 26/08/2046	शुक्र 23/03/2048
शनि 06/11/2041	बुध 25/11/2042	केतु 25/11/2045	शुक्र 19/10/2046	सूर्य 19/04/2048

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

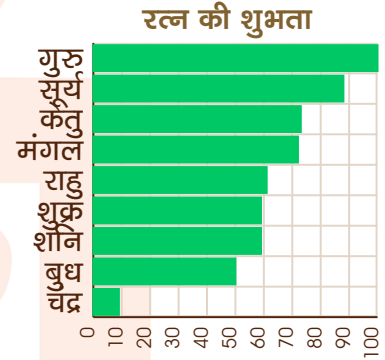
मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	88%	सुख, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	भाग्योदय, सुख
मूंगा	मंगल	72%	सुख, सन्तति सुख, कम खर्च
गोमेद	राहु	61%	पराक्रम, सुख
हीरा	शुक्र	59%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
नीलम	शनि	59%	सुख, धन, पराक्रम
पन्ना	बुध	50%	पराक्रम, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	9%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	08/05/2031	94%	22%	84%	25%	100%	59%	59%	47%	80%
राहु	08/05/2049	75%	0%	59%	50%	100%	66%	66%	73%	61%
गुरु	08/05/2065	94%	22%	78%	25%	100%	44%	59%	61%	73%
शनि	08/05/2084	75%	0%	59%	56%	100%	66%	72%	67%	61%
बुध	09/05/2101	94%	0%	72%	62%	100%	66%	59%	61%	73%
केतु	09/05/2108	75%	0%	78%	50%	100%	66%	44%	47%	86%
शुक्र	09/05/2128	75%	0%	72%	56%	100%	72%	66%	67%	80%
सूर्य	09/05/2134	100%	22%	78%	50%	100%	44%	44%	47%	61%
चंद्र	09/05/2144	94%	34%	72%	56%	100%	59%	59%	47%	61%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप यज्ञ याजन, दान, भजन, कीर्तन आदि धर्म कार्यों में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है। लेकिन जातक को राजकीय सेवा का अवसर भी मिलता है और जातक विदेश गमन करता है, जिसमें थोड़ा बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। यश, पद, प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के कारण शारीरिक स्थूलता तथा आलस्य थोड़े दिनों के लिए जातक को घेर लेती है। कभी रोग व्याधि भी पकड़ लेती है जिसमें थोड़ा ज्यादा धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट आ जाता है परन्तु कालान्तर में वे सब हट जाते हैं और आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक को पारिवारिक सदस्यों से किसी समय मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से कभी आंशिक क्लेश उठाना पड़ता है। जातक को अपने रिश्तेदार समय पर काम नहीं आते हैं और मित्रगण भी आंशिक रूप में क्लेश पहुँचाते हैं। जातक कानूनी-दस्तावेजों में भावुकतावश हस्ताक्षर कर थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और राज्यपक्ष से कभी प्रतिकूलता व निलम्बित होने का भय बना रहता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। परन्तु जातक के जीवन में एक अच्छा समय भी आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

### चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप

सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

### मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

### बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

### गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

## शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

## शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

## राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

## केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल  
( 03/04/2026 - 08/05/2031 )

मंगल की महादशा 03/04/2026 को आरम्भ और 08/05/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित हैं। दशम, एकादश तथा सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। सप्तमेश चन्द्र के फलस्वरूप आपको साझेदारी में लाभ हुआ होगा, यात्रा और सुखों की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सुख और अधिक परिश्रम किए बगैर धन की प्राप्ति होगी, माता से लाभ मिलेगा और जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको जीवन शक्ति, उत्साह और बल प्राप्त होगा। आपको ताप सम्बन्धी बीमारियाँ, बुखार, सरदर्द, संक्रामक रोग या हृदय गति में हल्की गड़बड़ी हो सकती है। इन मामूली पीड़ाओं को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अति उत्तम होगी। आपको अधिक प्रयास किये बगैर लाभ मिलेगा। जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ की सम्भावना भी है। आपकी व्यावसायिक कमाई अच्छी होगी। अपनी जीविका के लिए यान्त्रिक तथा अभियन्त्रण, सैन्य सेवा, सर्जन या दन्त चिकित्सक का कार्य या किसी औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, खेल के सामान, दवा, धातु, मशीन अथवा जमीन-जायदाद से सम्बद्ध व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। नौकरीपेशा लोगों की पदान्ति और आय में वृद्धि होगी तथा कार्य-स्थान में वातावरण अनुकूल होगा। आपका बहुमुखी विकास होगा। नौकरी के लिये यह काल अति उत्तम होगा। आपको यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ होगा। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। हर प्रकार के लाभ, ख्याति, प्रतिष्ठा तथा उन्नति के लिये यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको अति सुन्दर वाहन की प्राप्ति होगी। आपको सम्पत्ति, मकान और जमीन की प्राप्ति होगी। चल-अचल सम्पत्ति के लिये यह दशा अति उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी पसन्द के अनुसार विषयों व और संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। आपका झुकाव गणित, वाणित्य, अभियन्त्रण, भूगर्भ या सैन्य शिक्षा की ओर हो सकता है। आप अपने हर कार्य में सफल होंगे और सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। आप

अपने नेतृत्व-गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपके सम्बन्ध उत्तम रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख तथा लाभ प्राप्त होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण दाम्पत्य जीवन में कुछ गड़बड़ी हो सकती है। आपके जीवन साथी को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ, लाभदायक परिवर्तन और लाभ हो सकता है। आपके पिता को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ तथा उद्यम में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर तरह लाभ, चहुमुखी समृद्धि तथा धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य और ननिहाल से लाभ मिलेगा। उनके साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्र आपकी बहुत मदद करेंगे। इस दशा में आपको बगैर अधिक प्रयास के सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको सफलता, यश, श्याति तथा हर प्रकार के लाभ की प्राप्ति होगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा हो सकती है जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। बुध के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ मामूली समस्याएँ आएंगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। केतु आपके लिये कुछ मानसिक समस्याएँ उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप जीवन में उन्नति और बच्चों से सुख मिलेगा सूर्य की अन्तर दशा के कारण परिवर्तन होगा और आध्यात्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप साझेदारों से लाभ प्राप्त होगा तथा विवाह और यात्रा होगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु  
( 03/04/2026 - 28/09/2026 )**

आपकी मंगल की महादशा 03/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/04/2026 को प्रारंभ होकर 28/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। चुनाव और अदालत में विजयी होंगे। नौकरी में उच्चाधिकारियों से लाभ और प्रोन्नति का योग है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, मित्र बढ़ेंगे और कार्य पूर्ण होंगे। शिक्षा, लेखन, यात्रा और प्रकाशन के लिए समय शुभ है। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा, सम्मान और धन प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, धन का लाभ होगा। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता चुनाव में विजयी हो सकते हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बदपरहेजी से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि  
( 28/09/2026 - 07/11/2027 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2026 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/09/2026 को प्रारंभ होकर 07/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धनी बनने का संकेत है। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। घर में सुख-शांति आपके प्रयास से बनी रहेगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। विदेश की यात्रा कर सकते हैं, वहां से लाभ होगा। तबादले और प्रोन्नति का संकेत है। सम्मान और धन में वृद्धि होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति मौजूद रहेगी।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। उनका जनसंपर्क बढ़ेगा। आपके भाई-बहनों की आय में वृद्धि होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी, विरोधियों को परास्त करने की क्षमता रहेगी।

आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उनके जीवन में कुछ परिवर्तन और यात्रा हो सकते हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारी अपने कार्य का विस्तार करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए पंचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध  
( 07/11/2027 - 03/11/2028 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 07/11/2027 को प्रारंभ होकर 03/11/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप बहुत से काम पूरे करेंगे। आपकी सोचने-समझने की शक्ति उत्तम रहेगी और आप लेखन, पठन, शिक्षण और विचार विनिमय आदि में व्यस्त रह सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। उद्योग-व्यापार आदि से धन कमा सकते हैं। अचानक यात्रा हो सकती है, उच्च शिक्षा के अवसर मिल सकते हैं। प्रकाशन और व्यवसाय से लाभ के लिए शुभ समय है।

आपके जीवनसाथी के लिए समय सौभाग्यशाली रहेगा; उन्हें व्यापारिक यात्राओं से लाभ होगा। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में कमाई होगी। आपकी माता दान आदि सत्कर्मों पर धन खर्च कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, उनके लिए यात्रा का योग है और संचार माध्यम से जुड़ सकते हैं।

आपकी संतान के बहुत से मित्र होंगे, सम्मान मिलेगा और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय के कार्य आदि में सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी धन कमाएंगे, यात्रा करेंगे।

गले और स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को चारा आदि खिलाएं।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु  
( 03/11/2028 - 01/04/2029 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/11/2028

को प्रारंभ होकर 01/04/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप सत्कार्य करेंगे और दान-धर्म में रुचि लेंगे। पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। किस्मत साथ देगी; सब सुख उपलब्ध होंगे। शिक्षा द्वारा प्रसिद्धि मिल सकती है। विदेश यात्रा हो सकती है। किसी भाई या बहन का विवाह हो सकता है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प और साहस का परिचय देंगे। बाधाओं को पार कर लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

आपके जीवनसाथी धन और सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। आपके पिता उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध होंगे और धन का लाभ होगा। माता को शत्रुओं और विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, लाभ में वृद्धि होगी, उन्हें प्रभावशाली मित्रों से लाभ होगा।

आपकी संतान की उच्च शिक्षा हो सकती है; दार्शनिक विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो वर्तमान कार्यस्थल से लाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारी संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मामूली चोट आदि से कुछ परेशानी हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

### अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र ( 01/04/2029 - 01/06/2030 )

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/04/2029 को प्रारंभ होकर 01/06/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे, संतान का जन्म हो सकता है। धन का लाभ और संचय होगा। जीवन में खुशियां मिलेंगी। शत्रुओं पर जीत होगी। निवेश से लाभ होगा। घरेलू सुख मिलेगा। सुख के साधन उपलब्ध होंगे; सेवक भी मिल सकते हैं। आय अच्छी होगी। ललित कलाओं में रुचि होगी, शिक्षा उत्तम होगी, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

आपके जीवनसाथी की इच्छाओं की पूर्ति होगी, वे भूमि और वाहन क्रय कर सकते हैं। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। वे प्रसन्न रहेंगे। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिल सकता है; दान-धर्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे; उनकी इच्छाएं पूरी होंगी, साझेदारी से लाभ हो सकता है, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान अगर शिक्षारत है तो परीक्षा में सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; घरेलू जीवन सुखी होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं; तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं को भागीदारों से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मगर जरूरत से अधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य  
( 01/06/2030 - 07/10/2030 )**

आपकी मंगल की महादशा 03/04/2026 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 01/06/2030 को प्रारंभ होकर 07/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी शिक्षा उत्तम रहेगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रशासन से लाभ मिलेगा। जायदाद और वाहन क्रय कर सकते हैं। विरासत में संपत्ति मिल सकती है, शत्रु परास्त होंगे। निवास उत्तम रहेगा। माता धनी होंगी, उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। आपके भाई-बहन धन प्राप्त करेंगे मगर उनके खर्चे भी बढ़ेंगे। उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्थानांतरण और अधिक खर्चों की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा। परामर्शदाताओं को साझेदार से लाभ होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। अधिक परिश्रम और उत्तेजना से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल गाय, तांबा, गेहूं और गुड़ का दान करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - चंद्र  
( 07/10/2030 - 08/05/2031 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2026 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 07/10/2030 को प्रारंभ होकर 08/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आपको सफलता, धन और लोकप्रियता प्राप्त होंगे। आपकी उपलब्धियों को सम्मान मिलेगा। घरेलू सुख और प्रसन्नता प्राप्त होंगे। समाज में कल्याणकारी कार्य करेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अचल संपत्ति, खेती आदि से लाभ प्राप्त होगा। वाहन सुख मिलेगा। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। सुख-संतुष्टि से जीवन बसर होगा। निवास में परिवर्तन संभव है। आपके जीवनसाथी को सब सुख मिलेंगे; अचल संपत्ति से धनलाभ होगा। आपके पिता को विभिन्न माध्यमों से आय होगी। माता को व्यापार से लाभ हो सकता है; घरेलू

जीवन सुखी रहेगा। भाई-बहनों को अचानक लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता मिलेगी, विस्तृत कार्य में दक्ष होंगे, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत है तो सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, धन कमाएंगे, उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे, जबकि व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

